अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस
22 मई, 2021

पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधन विद्यालय, दून विष्वविद्यालय, देहरादून एवं भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी ने संयुक्त रूप से भारतीय कृषिवानिकी समिति, झाँसी एवं सोसायटी फॉर साइंस ऑफ क्लाइमेट चैंज एण्ड सस्टेनेबिल एनवायरनमेन्ट, नई दिल्ली के सहयोग से अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस का आयोजन दिनाँक 22 मई, 2021 को ''हम समाधान का हिस्सा हैं'' विषय पर जैव विविधता के संरक्षण के लिए जागरूकता एवं कार्यवाही को प्रोत्साहित करने के उद्देष्य से एक वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार प्रसिद्ध गांधीवादी–पर्यावरणवादी, पद्म विभूषण श्री सुंदरलाल बहुगुणा जी के हिमालय में जैव विविधता संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के लिए उनके आजीवन प्रयासों के लिए एक श्रद्धांजलि के रूप में समर्पित किया गया।

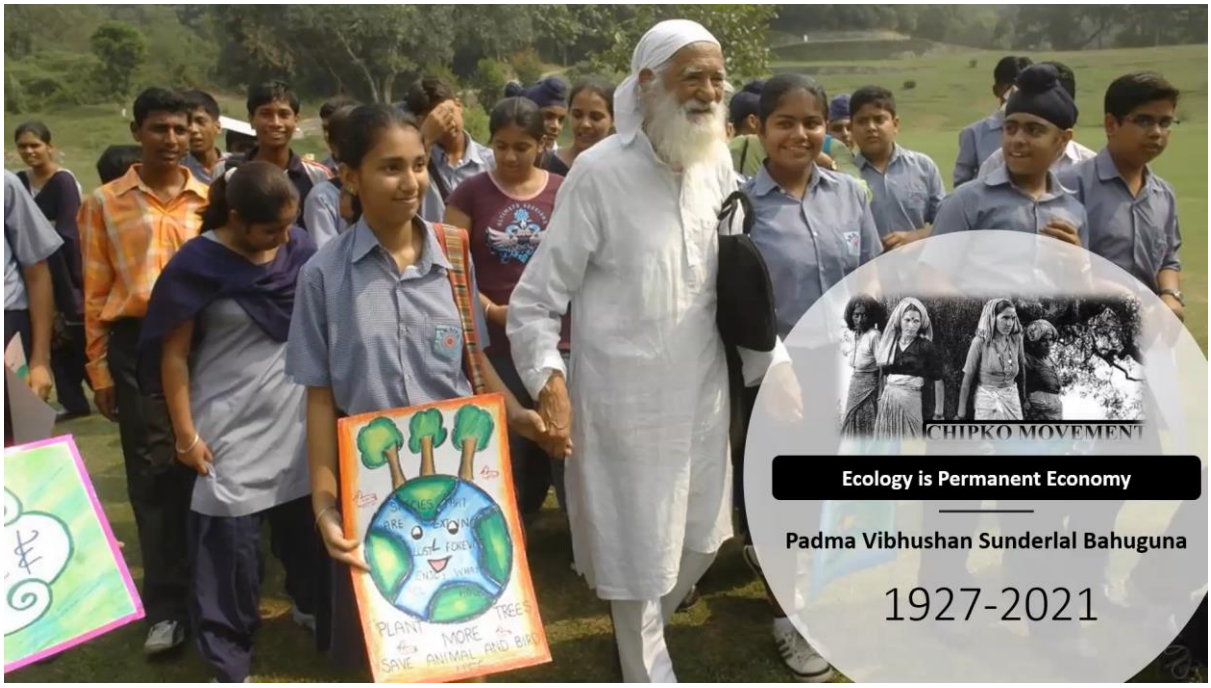

वेबिनार की अध्यक्षता दून विष्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल ने किया। कार्यक्रम में प्रो. सी. आर. बाबू, दिल्ली विष्वविद्यालय, प्रो. जे.के. शर्मा, षिव नादर विष्वविद्यालय, प्रो. एम.एल. खान, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विष्वविद्यालय, सागर एवं प्रो. एस. दयानन्द, कॉनकॉर्डिया विष्वविद्यालय, कनाडा को प्लानरी स्पीकर के रूप में शामिल किया गया। इसके साथ–ही–साथ दून विष्वविद्यालय के छात्रों की पहल ''प्रकृति–द नेचर क्लब'' थीम के साथ कुछ छात्र गतिविधियों जैसे पोस्टर मैकिंग, फोटोग्राफी, लघु वीडियो एवं छात्रों के लिए लेख लेखन भी आयोजित किया गया।

प्रो. कुसुम अरूणाचलम, दून विष्वविद्यालय ने अपने स्वागत भाषण में जैव विविधता दिवस मनाने के कारण और प्रासंगिकता पर प्रकाष डाला। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र ने जैव विविधता के मुद्दों की समझ और जागरूकता बढ़ाने के लिए 22 मई को अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के रूप में घोषित किया। जैव विविधता दिवस 2021 को ''हम प्रकृति के लिए समाधान का हिस्सा हैं'' नारे के तहत मनाया जा रहा है। इस नारे को पिछले साल उत्पन्न गति की निरन्तरता के रूप में चुना गया था। ''हमारा समाधान प्रकृति में है'' जो एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि जैव विविधता कई सतत विकास परिवर्तनों का उत्तर है।

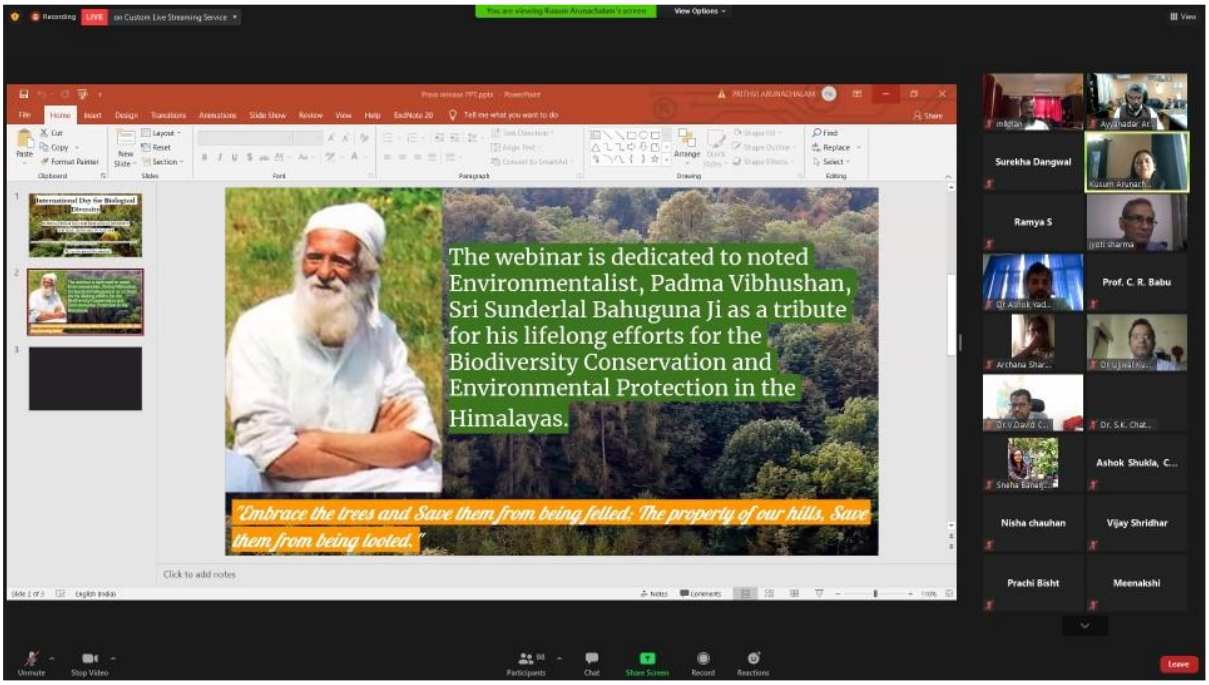

प्रो. सुरेखा डंगवाल, मान्नीय कुलपति दून विष्वविद्यालय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में रेखांकित किया कि प्रागितिहास, साहित्य एवं कला भौतिक वातावरण और मानव–पर्यावरण बातचीत के चित्रण के लिए तैयार किए गए हैं। आधुनिक पर्यावरणवादी आन्दोलन के रूप में उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में पहली बार उभरा और अपने हालिया अवतार में 1960 के दषक में, प्राकृतिक दुनिया में मनुष्यों के बदलते संबंधों से संबंधित काल्पनिक और गैर–काल्पनिक लेखन की एक समृद्ध श्रृंखला को जन्म दिया। उन्होंने इस क्षेत्र में जैव विविधता संरक्षण से जुड़े समृद्ध पारम्परिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण करने पर जोर दिया। उन्होंने वयोवृद्ध श्री सुन्दरलाल बहुगुणा को पहाड़ियों और पहाड़ी लोगों के लिए उनकी अनुकरणीय सेवाओं के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की।

दिल्ली विष्वविद्यालय के प्रोफेसर सी.आर. बाबू ने अपने मुख्य भाषण में वनस्पतिषास्त्री और पर्यावरणविद् को शहरी पर्यावरण स्थिरता और लचीलापन के लिए एक मॉडल के रूप में विस्तृत किया। चूँकि वे जंगल के अनूठे परिदृष्य हैं जहाँ देषी प्रजातियों के पारिस्थितिकी संयोजन होते हैं, यह शहरी पर्यावरण के लिए

मनोरंजक और साथ ही सौंदर्य मूल्य प्रदान करते हैं। उन्होंने नई दिल्ली में अरावली और यमुना जैव विविधता पार्क के अपने अनुभवों को साझा करते हुये, जो कि उनकी देख–रेख में विकसित किए गए थे, युवाओं से पर्यावरण सिद्धांतों के लिए आगे आने का आह्वान किया।

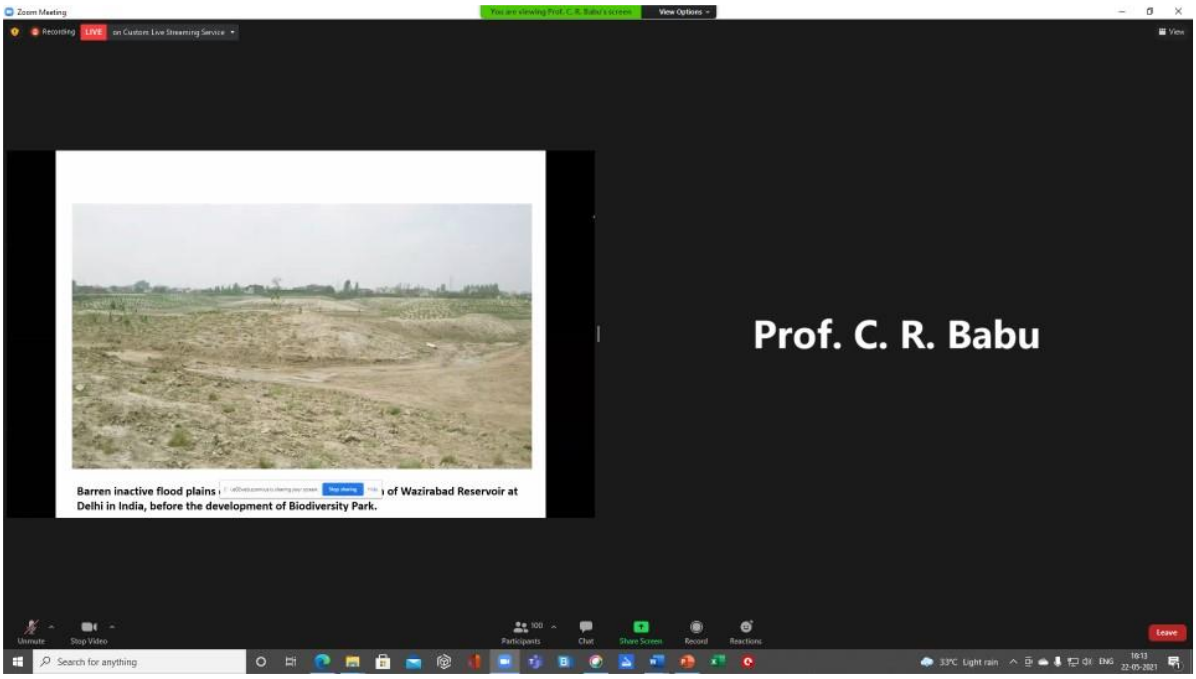

प्रो. जे.के. शर्मा, षिव नादर विष्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा ने पारिस्थितिकी तंत्र के कामकाज में तितलियों की भूमिका के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने कहा कि तितलियों का उपयोग निवास स्थान के नुकसान के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किया जा सकता है और वे अन्य षिकारियों के साथ–साथ परजीवियों की श्रेणी का समर्थन करते हैं, वे एक परागणक के रूप में कार्य करते हैं। एक सम्पन्न पारिस्थितिकी तंत्र वेब में महत्वपूर्ण कनेक्टर के रूप में कार्य करते हैं।

प्रो. एम.एल. खान, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विष्वविद्यालय, सागर (मध्य प्रदेष) ने जैव विविधता द्वारा प्रदान की जाने वाली पारिस्थितिक सेवाओं का लेखा–जोखा दिया और मानव पोषण में इसकी भूमिका को रेखांकित किया।

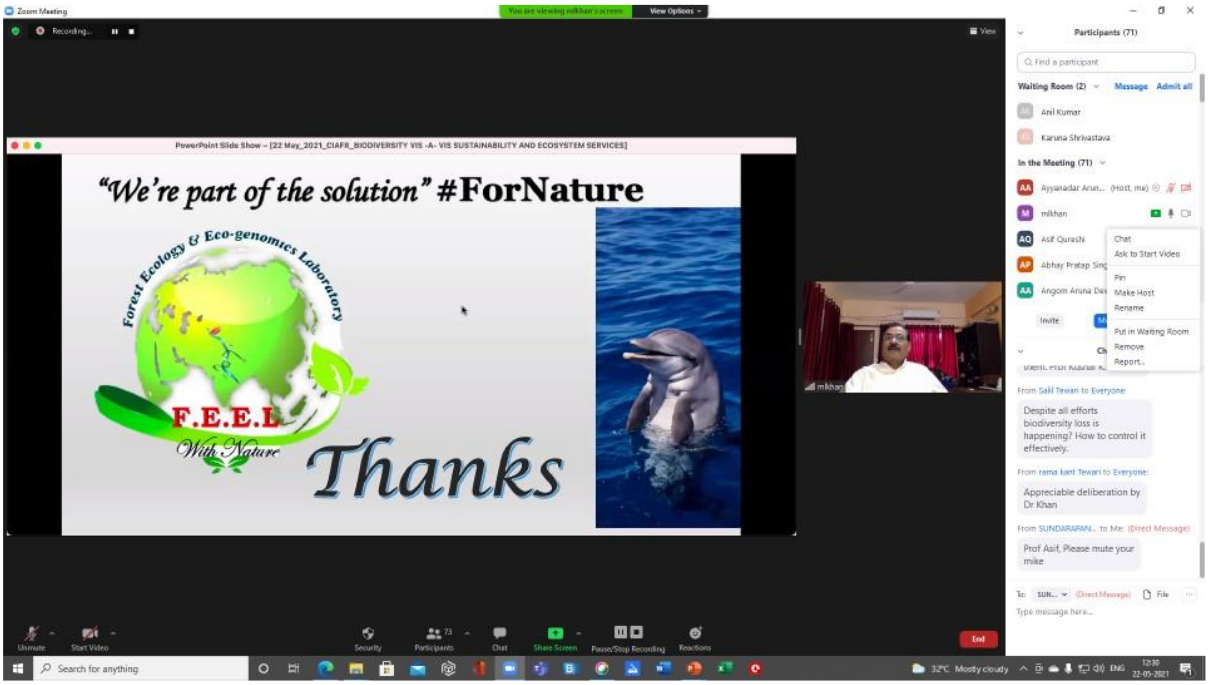

कॉनकॉर्डिया विष्वविद्यालय के प्रो. एस. दयानन्द ने वन और कृषि परिदृष्य में जैव विविधता के विकास और संरक्षण पर प्रकाष डाला। उन्होंने जैव पूर्वेक्षण और न्यूट्रास्युटिकल्स जैसे जैव विविधता के क्षेत्र में उभरने पर अनुसंधान के लिए नये क्षेत्र पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि वन–फार्म इंटरफेस को समझना इस नीले ग्रह में मानव जीविका के लिए जैव विविधता से भोजन, पोषण और अन्य पर्यावरण सेवाओं को जारी रखने के लिए आवष्यक इकोटोन स्तर का शोध है।

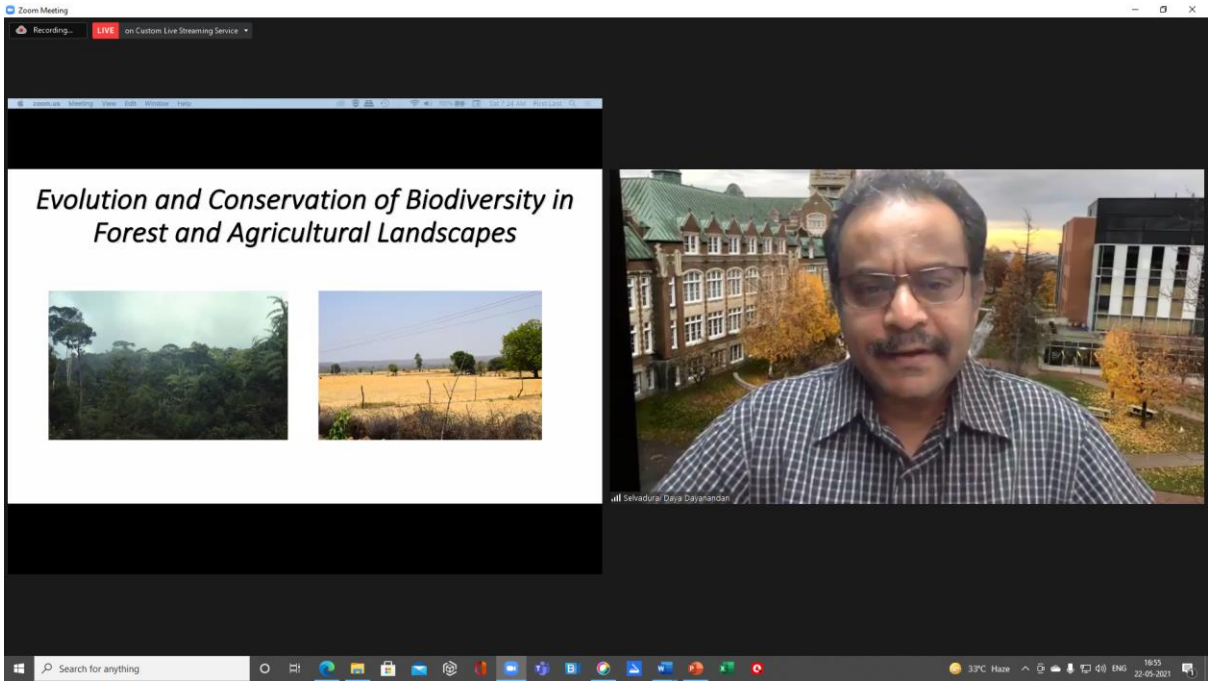

प्रो. आर. पी सिंह ने अपनी समापन टिप्पणी में जैव विविधता के महत्व और मानव कामकाज में इसकी सक्षमता के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किये। जैव विविधता की रक्षा करने की आवष्यकता है तथा उचित ज्ञान, अनुसंधान और प्रौद्योगिकियों के साथ, जैव विविधता से समझौता किए बिना सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

प्रो. कुसुम अरूणाचलम ने अन्त में इस अवसर पर आयोजित विभिन्न छात्र गतिविधियों के पुरस्कार विजेताओं की घोषणा की और प्रतिभागी छात्र/छात्राओं की सराहना की। पुरस्कार विजेताओं को आयोजकों द्वारा प्रमाण पत्र और भारतीय कृषिवानिकी समिति द्वारा नगद पुरस्कार घोषित किये गये।

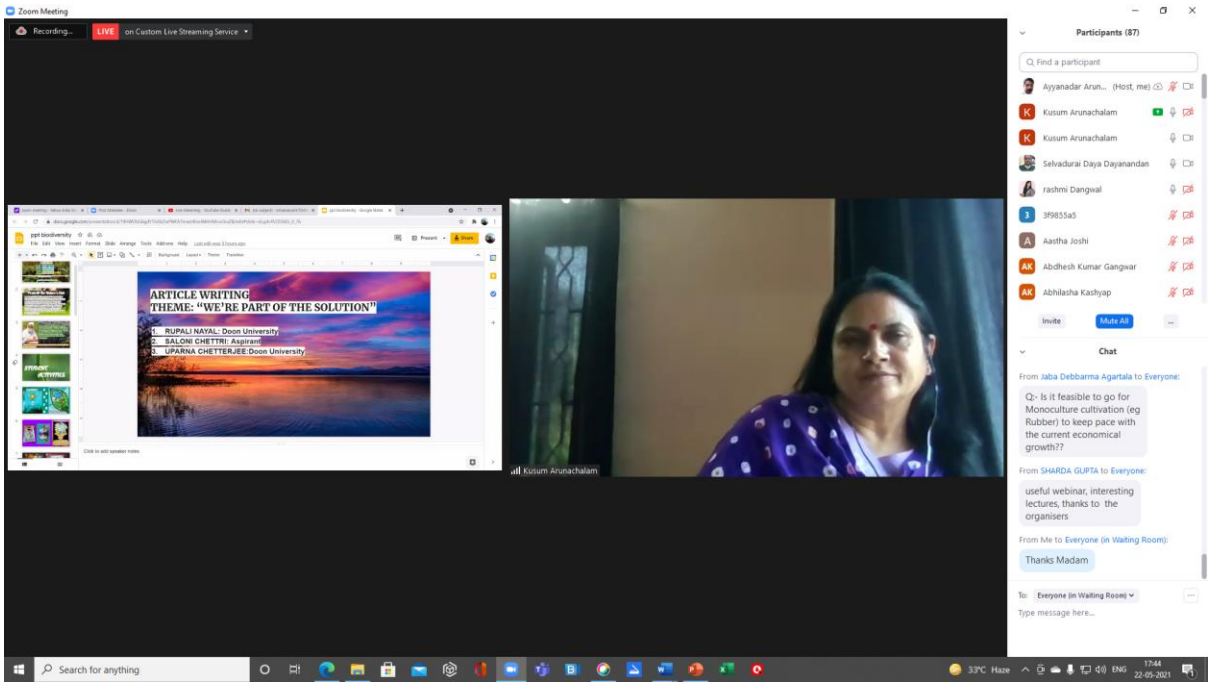

डॉ. ए. अरूणाचलम, निदेषक, केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी एवं अध्यक्ष, भारतीय कृषिवानिकी समिति, झाँसी तथा सचिव, साइंस ऑफ क्लाइमेट चैंज एण्ड सस्टेनेबिल एनवायरनमेन्ट, नई दिल्ली ने इस अवसर पर देष में जलवायु परिवर्तन शमन और खराब भूमि की बहाली में पेड़ों की भूमिका पर प्रकाष डालते हुये धन्यवाद प्रस्ताव दिया। उन्होंने पद्म विभूषण श्री सुंदरलाल बहुगुणा जी के मार्गदर्षन में संचालित चिपको आन्दोलन के महत्व पर भी प्रकाष डाला।

कार्यक्रम में देश के विभिन्न शैक्षणिक/अनुसंधान संस्थानों के लगभग 200 प्रतिभागियों और गैर–सरकारी संगठनों के प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा पुरस्कार भारतीय कृषिवानिकी समिति, झाँसी द्वारा प्रायोजित किए गए।

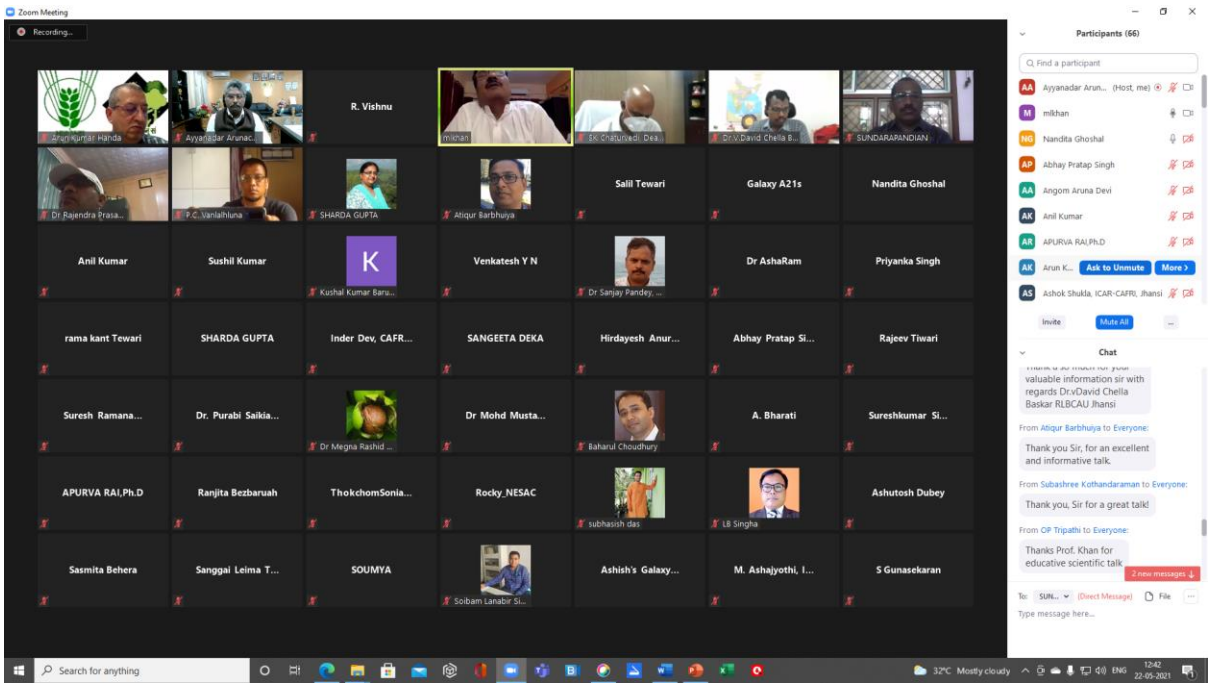

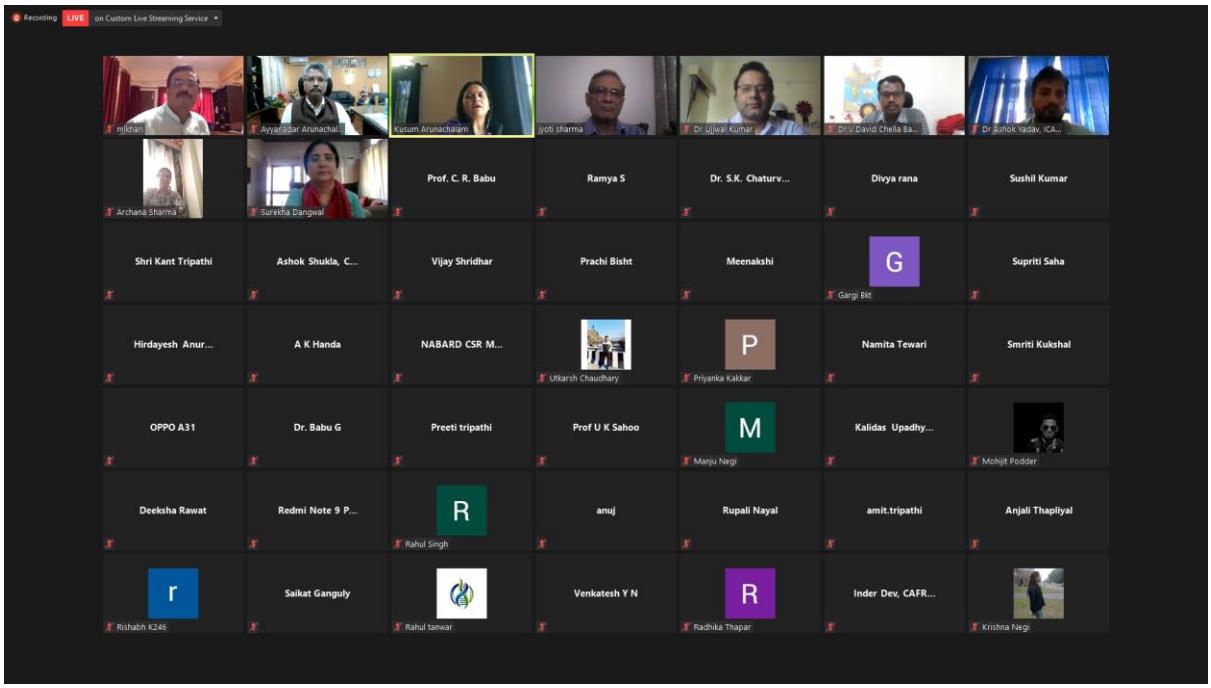

प्रो. कुसुम अरूणाचलम
विभागाध्यक्ष
पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधन विद्यालय
दून विष्वविद्यालय, देहरादून

डॉ. ए. अरूणाचलम
निदेषक
केन्द्रीय कृषिवानिकी अनु. संस्थान,
झाँसी